अगस्त: 2026

वर्ष : 9 अंक : 11

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

विज्ञान, नवाचार और समुदाय: सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की नई दिशा

भारत की अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी आज केवल मछली उत्पादन तक सीमित नहीं है। यह खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, ग्रामीण आजीविका, महिला सशक्तीकरण, जैव-विविधता संरक्षण, जलवायु अनुकूलन और ब्लू इकोनॉमी का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। जुलाई 2026 में संस्थान द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों में की गई गतिविधियां इस परिवर्तनशील भूमिका को स्पष्ट रूप से सामने लाती हैं।

सिक्किम की हिमालयी नदियों से लेकर पुलिकट झील, सुंदरबन और उमियम जलाशय तक वैज्ञानिक सर्वेक्षण, सामुदायिक जागरूकता और क्षमता निर्माण ने यह सिद्ध किया है कि सतत मात्स्यिकी का भविष्य विज्ञान और स्थानीय समुदायों की साझेदारी में निहित है। देशी मछली प्रजातियों का संरक्षण केवल जैव-विविधता की रक्षा नहीं करता, बल्कि स्थानीय खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को भी मजबूत करता है।

सुंदरबन में छोटी देशी मछलियों एवं कार्प के पॉलीकल्चर को बढ़ावा देना तथा उमियम जलाशय में जनजातीय महिला मत्स्यजीवियों को केज नेट एवं कौरैकल उपलब्ध कराना मात्स्यिकी को आजीविका और सामाजिक सशक्तीकरण से जोड़ने के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। विशेष रूप से महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ग्रामीण ब्लू इकोनॉमी को अधिक समावेशी बना सकती है।

इसी प्रकार, कृषि-औद्योगिक अपशिष्ट से किफायती मत्स्य आहार विकसित करने वाली 'कचरे से कांति' पहल चक्रीय अर्थव्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे उत्पादन लागत कम करने, संसाधनों के बेहतर उपयोग और जलीय कृषि की स्थिरता बढ़ाने की संभावनाएं हैं।

ड्रोन, GIS, AI, IoT और रिमोट सेंसिंग जैसी तकनीकों का उपयोग मात्स्यिकी संसाधन आकलन, जल गुणवत्ता निगरानी और वैज्ञानिक प्रबंधन को अधिक सटीक एवं डेटा-आधारित बना सकता है।

अतः भविष्य की भारतीय मात्स्यिकी का लक्ष्य केवल "अधिक उत्पादन" नहीं, बल्कि "अधिक उत्पादन के साथ बेहतर संरक्षण, आजीविका और पोषण सुरक्षा" होना चाहिए। विज्ञान, नवाचार और समुदाय की साझेदारी ही विकसित भारत @2047 के लिए एक मजबूत, समावेशी और जलवायु-अनुकूल अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की आधारशिला बनेगी।

(निदेशक)

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) के माननीय सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के महानिदेशक डॉ. एम. एल. जाट ने संस्थान के दौरे के दौरान अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी में परिवर्तन के लिए अनुप्रयुक्त अनुसंधान का आह्वान किया

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) के माननीय सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के महानिदेशक डॉ. एम. एल. जाट ने भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर का आधिकारिक दौरा किया। इस दौरे ने भारत के अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में नवाचार-आधारित, सतत एवं किसान-केंद्रित अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रति ICAR की प्रतिबद्धता को पुनः रेखांकित किया। उनके साथ ICAR के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. डी. के. यादव भी उपस्थित थे।

डॉ. जाट का स्वागत भा.कृ.अनु.प.-सिफरी के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ किया। दौरे की शुरुआत "एक पेड़ मां के नाम" राष्ट्रव्यापी अभियान के अंतर्गत पौधारोपण कार्यक्रम से हुई, जो पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता का प्रतीक था। इसके बाद उन्होंने वैज्ञानिकों के साथ संस्थान में चल रहे अनुसंधान, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी विकास के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त की। औपचारिक कार्यक्रम का शुभारंभ वंदे मातरम् के गायन से हुआ।

अपने संबोधन में डॉ. जाट ने भारत की अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए भविष्य के वैज्ञानिक प्रयासों में अनुप्रयुक्त अनुसंधान, बहुविषयक सहयोग और किसान-केंद्रित नवाचार को केंद्रीय भूमिका देने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सिफरी की भूमिका अनुप्रयुक्त अनुसंधान, बहुविषयक सहयोग तथा किसान-केंद्रित नवाचारों के माध्यम से अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी में परिवर्तन लाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने वैज्ञानिकों से प्रयोगशाला में विकसित अनुसंधान परिणामों को व्यापक स्तर पर अपनाई जा सकने वाली क्षेत्रीय तकनीकों में बदलने का आह्वान किया। उन्होंने संस्थागत सीमाओं से आगे बढ़कर अंतर्विषयक दृष्टिकोण अपनाने तथा किसानों एवं मछुआरों की उभरती समस्याओं के प्रत्यक्ष समाधान विकसित करने पर जोर दिया। डिजिटल कृषि के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने डेटा को भविष्य की "नई मुद्रा" बताया तथा कहा कि डेटा-आधारित अनुसंधान एवं डिजिटल प्रौद्योगिकियां कृषि एवं मात्स्यिकी नवाचार की अगली पीढ़ी को आकार देंगी।

डॉ. जाट ने वैज्ञानिक संस्थानों को ICAR के निरंतर सहयोग का आश्वासन दिया और उत्कृष्टता, नवाचार तथा सामाजिक प्रभाव की दिशा में वैज्ञानिकों को हर संभव प्रोत्साहन देने की बात कही।

इस अवसर पर डॉ. डी. के. यादव ने कहा कि वैज्ञानिक उत्कृष्टता का अंतिम उद्देश्य किसानों एवं मछुआरों के लिए ठोस लाभ में परिवर्तित होना चाहिए। उन्होंने अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान में सिफरी के अग्रणी योगदान की सराहना की और विश्वास व्यक्त किया कि संस्थान भारत की ब्लू इकोनॉमी एवं पोषण सुरक्षा को मजबूत करने वाली नवाचारी, सतत एवं हितधारक-केंद्रित तकनीकों का विकास जारी रखेगा।

डॉ. प्रदीप डे ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान की प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियों, उन्नत प्रौद्योगिकियों एवं भविष्य की अनुसंधान प्राथमिकताओं की जानकारी दी। उन्होंने विज्ञान-आधारित हस्तक्षेपों के माध्यम से भारत के अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि क्षेत्र को मजबूत करने में संस्थान के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डॉ. जाट को उनके दूरदर्शी नेतृत्व एवं कृषि तथा मात्स्यिकी अनुसंधान के प्रति निरंतर सहयोग के लिए संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया। उन्होंने मछुआरों, वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों एवं

कर्मचारियों के साथ संवाद किया और प्रौद्योगिकी प्रसार तथा सतत आजीविका सृजन को गति देने के लिए शोधकर्ताओं, प्रसार एजेंसियों एवं हितधारकों के बीच मजबूत सहयोग का आह्वान किया।

कार्यक्रम में सिफरी द्वारा विकसित कई वैज्ञानिक प्रकाशनों एवं ज्ञान उत्पादों का विमोचन भी किया गया। इनमें CIFRI-CleanMeen, एक नवीन जल-विक्षेपणीय खाद्य पौधों के अर्क पर आधारित फॉर्मुलेशन शामिल था, जो कार्प, कैटफिश तथा वायु-श्वसन करने वाली मछलियों सहित लाल-रक्त वाली खरपतवार मछलियों को 24 घंटे के भीतर चुनिंदा रूप से समाप्त करने में सक्षम है, जबकि झींगा, घोंघे एवं जूप्लवक जैसे श्वेत-रक्तीय जलीय जीवों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालता। इस अवसर पर "Fisheries Management Strategies for Dandua-beel, Assam" नामक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

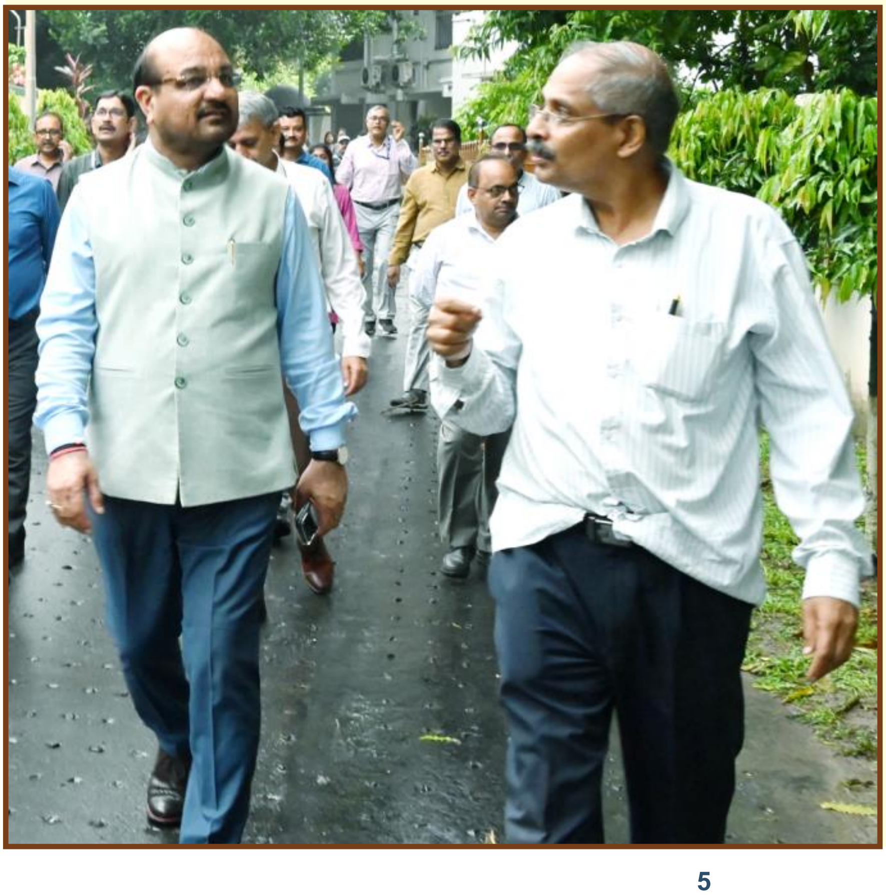

दौरे ने वैज्ञानिक नवाचार, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा प्रौद्योगिकी-आधारित विकास के माध्यम से सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी को आगे बढ़ाने में सिफरी की महत्वपूर्ण भूमिका को और मजबूत किया।

ऐसी कृषि पद्धतियों को अपनाने के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की, जो कृषि उत्पादकता, मृदा स्वास्थ्य तथा पर्यावरण संरक्षण को एक साथ बढ़ावा देती हैं।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने NFDB-NERC, गुवाहाटी के सहयोग से "सतत विकास के लिए जलवायु-अनुकूल मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि" विषय पर वेबिनार आयोजित किया

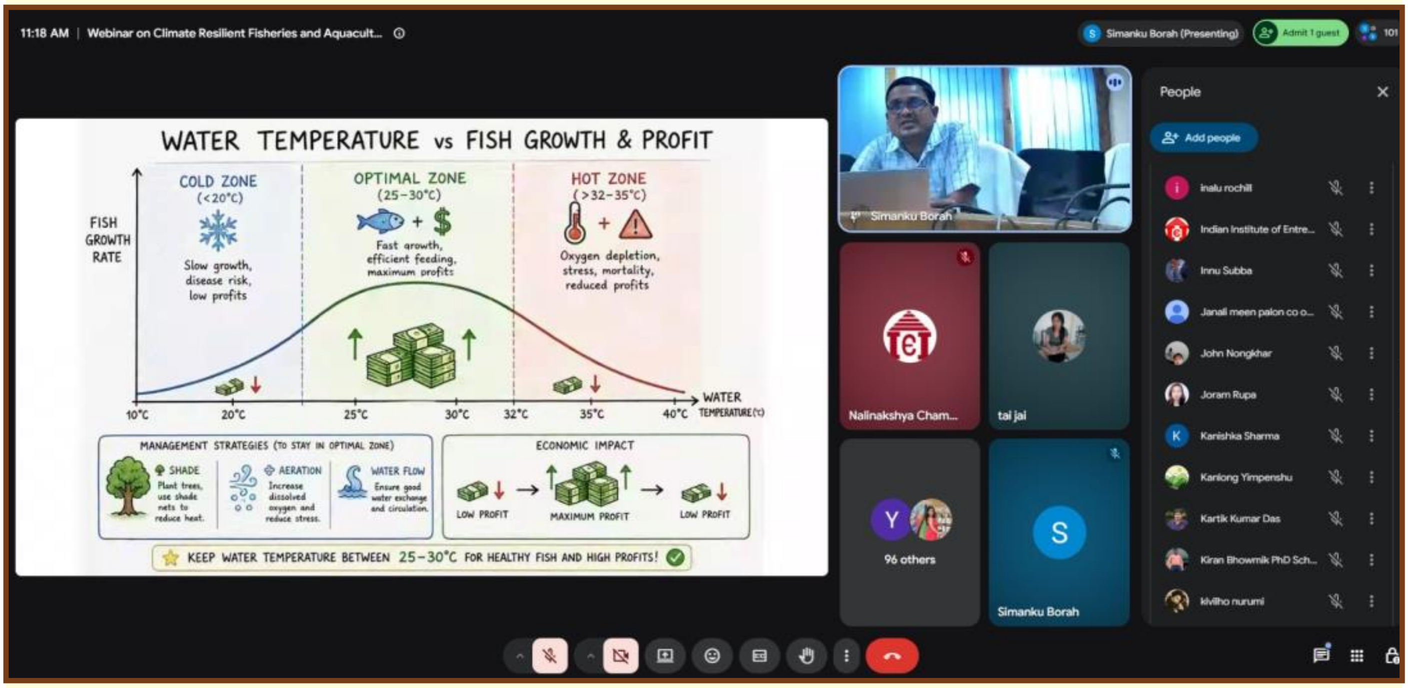

भा.कृ.अनु.पर.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड-उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केंद्र (NFDB-NERC), गुवाहाटी के सहयोग से 3 जुलाई 2026 को "सतत विकास के लिए जलवायु-अनुकूल मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि" विषय पर एक वेबिनार का सफलतापूर्वक आयोजन किया। यह कार्यक्रम ई-विस्तार पहल के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य उत्तर-पूर्व भारत के मत्स्य किसानों, मात्स्यिकी विशेषज्ञों, प्रसार कर्मियों, शोधकर्ताओं तथा अन्य हितधारकों के बीच जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों एवं प्रबंधन पद्धतियों का प्रसार करना था।

वेबिनार का शुभारंभ NFDB-NERC, गुवाहाटी के वरिष्ठ कार्यकारी (तकनीकी) एवं प्रभारी अधिकारी श्री आशीम कुमार बोरा के स्वागत संबोधन से हुआ। भा.कृ.अनु.पर.-सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. सुल्लिप कुमार माझी ने मुख्य वक्तव्य दिया। उन्होंने बदलती जलवायु परिस्थितियों के बीच सतत मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि सुनिश्चित करने के लिए जलवायु-अनुकूल दृष्टिकोण अपनाने की बढ़ती आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि प्रणालियों की अनुकूलन क्षमता बढ़ाने के लिए अनुकूलनशील प्रौद्योगिकियों के प्रसार के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

पहला तकनीकी व्याख्यान "ग्रीष्म ऋतु के चरम समय में मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि के प्रबंधन उपाय" विषय पर श्री आशीम कुमार बोरा द्वारा दिया गया। उन्होंने पालन की जा रही मछलियों में अत्यधिक तापमान से उत्पन्न तनाव को कम करने, जल गुणवत्ता बनाए रखने, आहार प्रबंधन को बेहतर बनाने तथा अत्यधिक गर्मी की परिस्थितियों में उत्पादन हानि को कम करने के लिए सावधानियां बरतने संबंधी व्यावहारिक उपायों पर प्रकाश डाला।

दूसरा तकनीकी व्याख्यान “जलवायु परिवर्तन एवं अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी पर इसका प्रभाव” विषय पर भा.कृ.अनु.प.- सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी. के. भट्टाचार्य द्वारा दिया गया। प्रस्तुति में जलवायु परिवर्तन के कारण अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी पर पड़ने वाले प्रभावों तथा मीठे पानी के पारिस्थितिक तंत्रों की अनुकूलन क्षमता बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित प्रबंधन उपायों पर प्रकाश डाला गया। इनमें आवास पुनर्स्थापन, सतत मात्स्यिकी प्रबंधन, सामुदायिक सहभागिता तथा जलवायु परिवर्तनशीलता के प्रभावों को कम करने के लिए अनुकूलन रणनीतियां प्रमुख थीं।

तकनीकी प्रस्तुतियों के बाद एक विचार मंचन सत्र आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने जलवायु अनुकूलन, सतत जलीय कृषि पद्धतियों तथा अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी संसाधनों के प्रबंधन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विशेषज्ञों के साथ सक्रिय संवाद किया। गर्मियों के दौरान मछली पालन प्रणालियों में ऑक्सीजन की कमी से संबंधित मत्स्य किसानों के प्रश्न के उत्तर में डॉ. सिमांकु बोरा ने बताया कि तल में जमा जैविक पदार्थ ऑक्सीजन की कमी का एक प्रमुख कारण है, जिससे बार-बार शैवाल प्रस्फुटन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। उन्होंने नियमित अंतराल पर जैविक गाद को हटाने का सुझाव दिया, जिससे ऑक्सीजन की कमी की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। वेबिनार में उत्तर-पूर्वी राज्यों के मत्स्य किसानों, विद्यार्थियों और मात्स्यिकी अधिकारियों सहित कुल 101 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अरुणाचल प्रदेश के मत्स्य निदेशक, जो ऑनलाइन तौर पर कार्यक्रम में उपस्थित थे, ने इस महत्वपूर्ण विषय पर वेबिनार आयोजित करने के लिए प्रसन्नता व्यक्त की और गर्मियों के दौरान जलीय कृषि तालाबों में अपनाई जाने वाली प्रबंधन पद्धतियों के संबंध में मत्स्य किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए सिफरी तथा NFDB के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने इस संबंध में एक निर्देश संकलन तैयार करने का अनुरोध किया, जिसे बाद में उत्तर-पूर्वी राज्यों के संबंधित मात्स्यिकी विभागों द्वारा क्षेत्रीय/स्थानीय भाषाओं में अनुवादित कर मत्स्य किसानों के लाभ के लिए उपलब्ध कराया जा सके। कार्यक्रम का समापन सिफरी के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए. के. यादव के प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे के मार्गदर्शन में किया गया, जिन्होंने संयोजक के रूप में कार्य किया। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. सुल्लिप कुमार माझी सह-संयोजक रहे। कार्यक्रम का समन्वय एवं संचालन क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए. के. यादव एवं डॉ. सिमांकु बोरा ने आयोजन सचिव के रूप में किया।

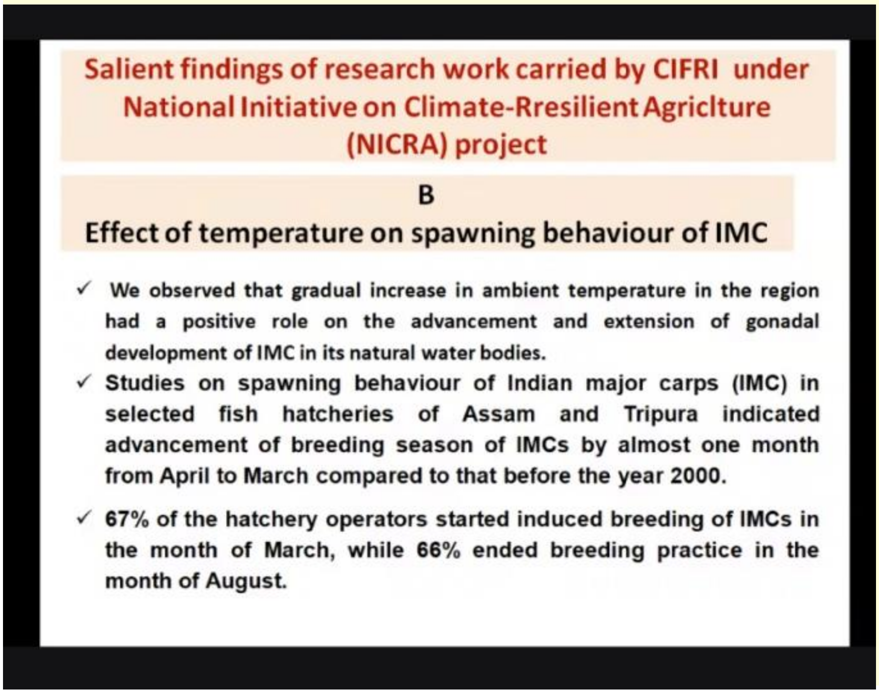

इस कार्यक्रम ने उत्तर-पूर्व भारत में ज्ञान प्रसार, हितधारक सहभागिता तथा सहयोगात्मक विस्तार पहलों के माध्यम से अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि में जलवायु अनुकूलन क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए सिफरी एवं NFDB की प्रतिबद्धता को और मजबूत किया तथा मात्स्यिकी क्षेत्र के सतत विकास में योगदान दिया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने "ग्रामीण सहारा" के सहयोग से "एकीकृत कृषि प्रणालियां: ग्रामीण समुदायों के लिए कृषि, मात्स्यिकी एवं आजीविका सुरक्षा" विषय पर वेबिनार आयोजित किया

सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने असम की गैर-लाभकारी संस्था, Grameen Sahara के सहयोग से 7 जुलाई 2026 को "एकीकृत कृषि प्रणालियां: ग्रामीण समुदायों के लिए कृषि, मात्स्यिकी एवं आजीविका सुरक्षा" विषय पर एक वेबिनार का सफलतापूर्वक आयोजन किया। यह कार्यक्रम असम के ग्रामीण समुदायों के विकास के लिए एकीकृत कृषि प्रणालियों से संबंधित जानकारी के प्रसार हेतु ई-विस्तार पहल के अंतर्गत आयोजित किया गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं वेबिनार के आयोजन सचिव डॉ. सिमांकु बोरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। मत्स्य विभाग, असम सरकार; College of Fisheries, Assam Veterinary and Fisheries University, Raha तथा Krishi Vigyan Kendra, Assam Agricultural University, Kamrup के विशेषज्ञों ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए। इनमें कृषि एवं मात्स्यिकी एकीकरण के सामुदायिक आधारित मॉडल, ग्रामीण आजीविका सुरक्षा के प्रेरक के रूप में मात्स्यिकी, मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि में महिलाओं की नेतृत्वकारी भूमिका तथा बाढ़, सूखे और बदलते मौसम के अनुरूप मत्स्य पालन में अनुकूलन प्रमुख थे।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. एस. बोरा ने विशेषज्ञों द्वारा दिए गए व्याख्यानों के आधार पर प्रमुख संदेश प्रस्तुत किए। उन्होंने घुलित ऑक्सीजन की कमी की समस्या से निपटने के लिए मछली तालाबों की नियमित गाद सफाई, तालाबों में नियमित चूना डालने, किसानों की आय बढ़ाने के लिए एकीकृत कृषि पद्धतियों को अपनाने तथा मत्स्य फार्मों में जैव-सुरक्षा उपायों पर जोर दिया। इसके अलावा कम लागत वाली मछली सुखाने की तकनीक, मछली में मूल्य संवर्धन, बाढ़-प्रतिरोधी मत्स्य पालन तकनीक के रूप में अल्प-अवधि मछली पालन, बाढ़ के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली एवं तैयारी, घरेलू तालाबों में मत्स्य बीज पालन तथा मोला जैसी छोटी देशी मछलियों के पालन को भी महत्वपूर्ण बताया गया। वेबिनार में मत्स्य किसानों, मात्स्यिकी से जुड़ी महिलाओं तथा विद्यार्थियों सहित कुल 132 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

मत्स्य किसान दिवस की पूर्व संध्या पर सिक्किम में सतत मात्स्यिकी को सुदृढ़ किया और युवाओं को प्रेरित किया

उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र में सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी एवं आजीविका संवर्धन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए, सिफरी, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने मत्स्य विभाग, सिक्किम सरकार के सहयोग से राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस की पूर्व संध्या पर सोरेंग जिले के Rothak Fish Farm में जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम आयोजित किया। तकनीकी सत्रों के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक तालाब प्रबंधन, जल गुणवत्ता प्रबंधन, मत्स्य उत्पादकता एवं फार्म लाभप्रदता बढ़ाने के लिए उन्नत जलीय कृषि तकनीकों तथा एक्वेरियम में सजावटी मछलियों के वैज्ञानिक प्रबंधन पर व्यावहारिक प्रदर्शन एवं विशेषज्ञ मार्गदर्शन दिया। संवादात्मक सत्रों ने किसानों को क्षेत्रीय स्तर की समस्याओं पर चर्चा करने तथा उत्पादकता, स्थायित्व और आय बढ़ाने के लिए उपयुक्त वैज्ञानिक समाधान प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया।

कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे तथा क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. सुलिप कुमार माझी के समग्र मार्गदर्शन में किया गया। इसका समन्वय डॉ. नीति शर्मा, डॉ. श्यामल चंद्र शुक्ल दास तथा डॉ. दिबाकर भक्त ने किया। सिक्किम सरकार के मत्स्य विभाग से श्री दुचेन लेप्चा, उप निदेशक मत्स्य; श्री कृष्ण प्रसाद शर्मा, रेंज अधिकारी (मत्स्य) तथा श्रीमती दीपा छेत्री, प्रखंड अधिकारी (मत्स्य) ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण निकटवर्ती विद्यालयों को 21 एक्वेरियम इकाइयों, सजावटी मछलियों, मत्स्य आहार एवं आवश्यक उपकरणों सहित वितरण था। इस अनूठी पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों में सजावटी

मात्स्यिकी के प्रति रुचि विकसित करना, पर्यावरण संरक्षण की भावना को बढ़ावा देना, जलीय जैव-विविधता के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से वैज्ञानिक मत्स्य पालन को प्रोत्साहित करना था।

इस अवसर पर डॉ. डे ने कहा कि राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस की पूर्व संध्या पर यह पहल विज्ञान-आधारित नवाचारों के माध्यम से मत्स्य किसानों को सशक्त बनाने और अगली पीढ़ी को पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित करने की दिशा में सिफरी की प्रतिबद्धता एक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि राज्य के मत्स्य विभागों के साथ मजबूत साझेदारी से ऐसे सुदृढ़ एवं सतत मात्स्यिकी पारिस्थितिक तंत्र विकसित किए जा रहे हैं, जो आजीविका, पोषण सुरक्षा, जलीय जैव-विविधता संरक्षण तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के समावेशी एवं सतत विकास में योगदान करेंगे।

कार्यक्रम में मत्स्य विभाग के 63 मत्स्य किसानों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य विज्ञान-आधारित जलीय कृषि को बढ़ावा देना, किसानों की क्षमता को सुदृढ़ करना तथा क्षेत्र में सतत मात्स्यिकी पद्धतियों को अपनाने में तेजी लाना था।

राष्ट्र की प्रोटीन सुरक्षा सुनिश्चित करने वाले मत्स्य किसानों का सम्मान: सिफरी ने राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस मनाया, नीली क्रांति 2.0 के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई

भारत के मत्स्य किसानों के खाद्य, पोषण एवं आजीविका सुरक्षा में अमूल्य योगदान का सम्मान करते हुए सिफरी ने राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस 2026 उत्साहपूर्वक मनाया। कार्यक्रम में नीति-निर्माताओं, वैज्ञानिकों, मछुआरों, उद्यमियों तथा अन्य हितधारकों ने भाग लिया। इस अवसर पर भारत के मात्स्यिकी क्षेत्र के अग्रदूतों को सम्मानित करने के साथ विज्ञान एवं नवाचार के माध्यम से सतत एवं जलवायु-अनुकूल अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दोहराया गया।

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस उस ऐतिहासिक वैज्ञानिक उपलब्धि की स्मृति में मनाया जाता है, जब 10 जुलाई 1957 को प्रसिद्ध मात्स्यिकी वैज्ञानिक प्रो. हीरालाल चौधरी और उनकी टीम ने कटक के अंगुल फिश फार्म में भारतीय प्रमुख कार्प मछलियों की प्रेरित प्रजनन तकनीक सफलतापूर्वक विकसित की थी। तत्कालीन केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान स्टेशन, जो वर्तमान में हुए भा.कृ.अनु.पर.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान है, के अंतर्गत हासिल की गई इस ऐतिहासिक उपलब्धि ने भारत में जलीय कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन किया और देश की पहली नीली क्रांति की आधारशिला रखी।

समारोह का उद्घाटन पश्चिम बंगाल सरकार के पशु संसाधन विकास एवं मात्स्यिकी विभाग के माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री राजेश महाता ने किया। विशिष्ट अतिथियों में उत्तर 24 परगना के बैरकपुर के उप-मंडल अधिकारी श्री यादव सूर्यभान अछेलाल, IAS तथा भा.कृ.अनु.प..-CIFE क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख डॉ. तपस घोषाल शामिल थे। कार्यक्रम में 49 महिला मछुआरों एवं मत्स्य किसानों सहित 120 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान ने कई वैज्ञानिक प्रकाशनों का भी विमोचन किया।

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी में उत्कृष्टता एवं नवाचार के लिए पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, कर्नाटक, ओडिशा और उत्तर प्रदेश के नौ प्रगतिशील मत्स्य किसानों, जिनमें दो महिला मछुआरे भी शामिल थीं, को मात्स्यिकी क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

अपने संबोधन में माननीय मंत्री श्री महाता ने मत्स्य किसानों से सिफरी द्वारा विकसित आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने तथा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) जैसी प्रमुख सरकारी पहलों का प्रभावी उपयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान-आधारित जलीय कृषि और मजबूत संस्थागत सहयोग से मत्स्य उत्पादन बढ़ाने, ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने तथा पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

संस्थान के निदेशक, डॉ. प्रदीप डे ने संस्थान के जलाशयों एवं आर्द्रभूमियों में उत्पादकता बढ़ाने, नदी पुनर्स्थापन, पर्यावरणीय प्रवाह आवश्यकताओं, जलीय जैव-विविधता संरक्षण तथा सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की दिशा में किए जा रहे अग्रणी अनुसंधान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संस्थान जलवायु-अनुकूल, किसान-केंद्रित एवं पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित तकनीकों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है, जो उत्पादकता बढ़ाने, जलीय जैव-विविधता के संरक्षण तथा आजीविका सुधार में सहायक होंगी।

कार्यक्रम में यह भी बताया गया कि भारत का कुल मत्स्य उत्पादन 2013-14 में 95.79 लाख टन से बढ़कर 2024-25 में 197.75 लाख टन हो गया है, जो 106 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। 2014-15 से भारत सरकार के मत्स्य विभाग की विभिन्न पहलों के माध्यम से 74.66 लाख प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार अवसर सृजित हुए हैं।

भारत आज विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मत्स्य उत्पादक देश है और वैश्विक मत्स्य उत्पादन में लगभग 8 प्रतिशत योगदान देता है। देश जलीय कृषि तथा कैप्चर फिशरीज में भी दूसरे स्थान पर है तथा झींगा उत्पादन एवं निर्यात में विश्व में अग्रणी है। लगभग 29,000 किमी लंबी नदियों, 0.20 मिलियन हेक्टेयर मुहानों, 0.35 मिलियन हेक्टेयर आर्द्रभूमियों तथा 2.2 मिलियन हेक्टेयर तालाबों एवं जलाशयों के साथ भारत में प्रस्तावित 22 मिलियन टन मत्स्य उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने की व्यापक संभावनाएं हैं।

कार्यक्रम से पहले NFDB, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित वैज्ञानिक–मछुआरा संवाद बैठक आयोजित की गई, जिसमें मछुआरों को वैज्ञानिकों के साथ सीधे संवाद करने, क्षेत्रीय समस्याओं पर चर्चा करने तथा उत्पादकता एवं स्थायित्व बढ़ाने के लिए व्यावहारिक वैज्ञानिक समाधान प्राप्त करने का अवसर मिला। साथ ही सरकारी मिशनों एवं योजनाओं के साथ समन्वय की संभावनाओं की पहचान के लिए "Creative Solutions Lab" आयोजित किया गया।

संस्थान के प्रयागराज केन्द्र ने राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस मनाया

भा.कृ.अनु.पर.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र ने 10 जुलाई 2026 को उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी स्थित Prakash Fish Enterprise में राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस उत्साहपूर्वक मनाया। भारत में हर वर्ष 10 जुलाई को राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य मत्स्य किसानों के योगदान को मान्यता देना तथा खाद्य सुरक्षा, रोजगार एवं आर्थिक विकास में मात्स्यिकी एवं जलीय कृषि के महत्व को रेखांकित करना है।

यह दिवस पौष्टिक खाद्य उत्पादन में मत्स्य किसानों की मेहनत एवं समर्पण को सम्मानित करने के साथ वैज्ञानिक मत्स्य पालन, सतत जलीय कृषि पद्धतियों एवं आधुनिक प्रौद्योगिकियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने का अवसर भी प्रदान करता है। इस अवसर पर कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश के प्रगतिशील मत्स्य किसान श्री राम प्रकाश को मात्स्यिकी क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। वे अपने मत्स्य पालन को बेहतर बनाने के लिए सिफरी प्रयागराज से लगातार तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे हैं।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों ने मत्स्य उत्पादकता, मत्स्य बीज गुणवत्ता एवं अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी संसाधनों के सतत प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए हालिया अनुसंधान निष्कर्षों एवं नवीन प्रौद्योगिकियों की जानकारी दी।

कार्यक्रम में क्षेत्र के मत्स्य किसानों, उद्यमियों एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने, ग्रामीण आजीविका सृजित करने तथा सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी विकास को बढ़ावा देने में मत्स्य किसानों के अमूल्य योगदान को सम्मानित करना था। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. वी. आर. ठाकुर ने किया।

कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे तथा क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज के प्रमुख डॉ. बी. आर. चव्हाण के समग्र मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम ने अनुसंधान, नवाचार, क्षमता निर्माण तथा मत्स्य किसानों के साथ निकट सहयोग के माध्यम से अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी को सुदृढ़ करने की संस्थान की प्रतिबद्धता को पुनः पुष्ट किया।

हिमालयी नदी मत्स्य जैव-विविधता के संरक्षण के लिए सिफरी ने सिक्किम में समुदायों को संगठित किया

पूर्वी हिमालय की संवेदनशील जलीय जैव-विविधता के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए सिफरी, बैरकपुर ने सिक्किम में एक सप्ताह तक चलने वाले क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं जागरूकता अभियान का नेतृत्व किया। इस अभियान में वैज्ञानिकों, सरकारी एजेंसियों एवं स्थानीय समुदायों को एक साथ लाकर राज्य की विशिष्ट नदीय मत्स्य संपदा के संरक्षण पर जोर दिया गया। "Management of Aquatic Resources in Open Waters of Sikkim" नामक यह अभियान 7 से 14 जुलाई तक सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी तथा सिक्किम सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से आयोजित किया गया।

इस अभियान के अंतर्गत मंगन, गंगटोक, पाक्योंग, सोरेंग एवं नामची जिलों को शामिल किया गया। इसका उद्देश्य तीस्ता नदी बेसिन में वैज्ञानिक आकलन, सामुदायिक सहभागिता एवं संरक्षण जागरूकता के माध्यम से सतत मात्स्यिकी प्रबंधन को मजबूत करना था।

कार्यक्रम का नेतृत्व सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने किया। सिक्किम सरकार के मत्स्य विभाग की सचिव सुश्री रोशनी राय, निदेशक श्री के. के. श्रेष्ठ तथा भा.कृ.अनु.प.-कें.अं.मा.अ.सं., क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. एस. के. माझी ने सहयोग प्रदान किया। अभियान में मछुआरों, मत्स्य किसानों, विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों एवं मात्स्यिकी अधिकारियों सहित 150 से अधिक प्रतिभागियों ने सक्रिय भागीदारी की।

अभियान के दौरान वैज्ञानिकों ने तीस्ता नदी, रंगीत नदी तथा उनकी सहायक नदियों में व्यापक क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं प्रायोगिक मत्स्यन किया। इसका उद्देश्य मछली विविधता, आवास गुणवत्ता तथा स्थानिक शीत-जल मछली प्रजातियों की संरक्षण स्थिति का आकलन करना था। स्थानीय मछली पकड़ने वाले समुदायों के पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान का भी दस्तावेजीकरण किया गया, जिससे मछली आबादी, नदी पारिस्थितिकी एवं मात्स्यिकी में दीर्घकालिक परिवर्तनों को समझने में सहायता मिली।

जागरूकता कार्यक्रम में हिमालयी नदी पारिस्थितिक तंत्रों के महत्व तथा सतत मात्स्यिकी प्रबंधन की आवश्यकता पर तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। डॉ. नीति शर्मा ने तीस्ता नदी प्रणाली की स्थानिक मछली प्रजातियों की विविधता एवं संरक्षण स्थिति पर चर्चा की। डॉ. एस. सी. एस. दास ने मौसमी मत्स्यन प्रतिबंध, आवास संरक्षण एवं पारिस्थितिक स्थिरता पर जोर दिया। डॉ. दिबाकर भक्त ने जिम्मेदार मत्स्यन पद्धतियों को अपनाने तथा प्रजननक्षम मछलियों एवं किशोर मछलियों को नदियों में वापस छोड़ने का आह्वान किया।

अभियान में हिमालयी नदियों के सामने बढ़ते खतरों—आवास क्षरण, जलविद्युत विकास, अनियंत्रित मत्स्यन तथा जलवायु परिवर्तन—पर भी प्रकाश डाला गया। स्थानीय भाषाओं में जागरूकता सामग्री एवं क्षेत्रीय प्रदर्शन के माध्यम से प्रतिभागियों को नदी पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण और सिक्किम की देशी मत्स्य जैव -विविधता की रक्षा में सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रेरित किया गया।

ICAR का 98वां स्थापना दिवस नवाचार एवं सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी विकास पर नए संकल्प के साथ मनाया

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के 98वें स्थापना दिवस को उत्साह एवं नए संकल्प के साथ मनाया। संस्थान ने नई दिल्ली के NASC Complex में आयोजित राष्ट्रीय स्थापना दिवस कार्यक्रम का लाइव वेबकास्ट के माध्यम से हिस्सा लिया। भा.कृ.अनु.पर.-कें.अं.मा.अ.सं. के वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, प्रशासनिक कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं ने कार्यक्रम में भाग लेकर अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान, तकनीकी नवाचार एवं सतत मात्स्यिकी विकास को मजबूत करने की प्रतिबद्धता दोहराई।

राष्ट्रीय समारोह में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी तथा पंचायती राज मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह, राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी, श्री रामनाथ ठाकुर एवं प्रो. एस. पी. बघेल, ICAR के महानिदेशक एवं DARE के सचिव डॉ. एम. एल. जाट तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने ICAR की 98 वर्षों की यात्रा तथा भारतीय कृषि में इसके परिवर्तनकारी योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने अनुसंधान, नवाचार एवं प्रभावी प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के महत्व पर जोर दिया और किसानों की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए निरंतर वैज्ञानिक प्रगति एवं आधुनिक तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता बताई।

ICAR के शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ते हुए उन्होंने 100 Climate-Smart Villages, 100 Young Scientist Grand Challenges, One Institute-One Grand Innovation, प्रत्येक ICAR संस्थान द्वारा एक-एक जिले को गोद लेने, कृषि विज्ञान केंद्रों को Innovation and Technology Centres में बदलने, ICAR Open Digital Knowledge Platform स्थापित करने तथा ICAR के 100वें स्थापना वर्ष तक 10 करोड़ किसानों तक वैज्ञानिक तकनीकों एवं आधुनिक कृषि समाधानों को पहुंचाने जैसी पहलों की घोषणा की।

केंद्रीय मत्स्य मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने मात्स्यिकी विकास में उभरती प्रौद्योगिकियों की भूमिका को रेखांकित करते हुए भा.कृ.अनु.प.-कें.अं.मा.अ.सं. द्वारा किए जा रहे ड्रोन-आधारित नवाचारों की सराहना की। उन्होंने मात्स्यिकी अनुसंधान, संसाधन आकलन एवं अंतर्स्थलीय जलीय संसाधनों के सतत प्रबंधन में प्रौद्योगिकी-आधारित दृष्टिकोण के महत्व पर जोर दिया।

डॉ. एम. एल. जाट ने विज्ञान एवं नवाचार की भूमिका को रेखांकित करते हुए एक सुदृढ़, सतत एवं आत्मनिर्भर कृषि भविष्य के निर्माण पर जोर दिया। उन्होंने किसान सशक्तीकरण, पर्यावरण संरक्षण तथा मांग-आधारित अनुसंधान एवं परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकियों के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की ICAR की दृष्टि को दोहराया।

राष्ट्रीय कार्यक्रम के बाद सिफरी. में निदेशक एवं विभिन्न प्रभागों के प्रमुखों की भागीदारी में एक विचार मंथन सत्र आयोजित किया गया। इसमें ICAR नेतृत्व द्वारा दिए गए संदेशों, विचारों एवं भविष्य की दिशाओं पर चर्चा की गई। सत्र में संस्थागत प्राथमिकताओं के पुनरीक्षण, नवाचार-आधारित अनुसंधान, जलवायु-अनुकूल मात्स्यिकी तकनीकों तथा किसान एवं हितधारक-केंद्रित हस्तक्षेपों के प्रभाव को बढ़ाने पर जोर दिया गया।

ICAR के भावी प्रशासनिक नेतृत्व के निर्माण हेतु चरण-II प्रशिक्षण कार्यक्रम का में शुभारंभ

संस्थागत प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए क्षमता निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने नव नियुक्त सहायकों (Reserve Panel) के लिए चरण-II प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। संस्थान इस कार्यक्रम के लिए नामित नोडल केंद्र है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रदीप डे के समग्र मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

प्रशिक्षण में भा.कृ.अनु.परि.-कें.अं.मा.अ.सं., भा.कृ.अनु.परि.-CRIJAF, भा.कृ.अनु.परि.-IIAB, भा.कृ.अनु.परि.-NRC on Litchi, भा.कृ.अनु.परि.-IARI, भा.कृ.अनु.परि.-NISA तथा भा.कृ.अनु.परि.-CRRI से प्रतिभागी शामिल हुए।

उद्घाटन अवसर पर डॉ. डे ने संस्थागत प्रशासन को मजबूत करने और राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली को प्रभावी समर्थन प्रदान करने में प्रशासनिक कार्यबल की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सक्षम, प्रतिबद्ध एवं सक्रिय प्रशासनिक संवर्ग प्रत्येक सफल अनुसंधान संगठन की आधारशिला तथा संगठनात्मक दक्षता एवं उत्कृष्टता का प्रमुख आधार है।

उन्होंने प्रतिभागियों से नियम-आधारित दृष्टिकोण से भूमिका-आधारित दृष्टिकोण की ओर बढ़ने तथा अपने कार्यों में स्वामित्व एवं जवाबदेही की भावना विकसित करने का आह्वान किया। उन्होंने संचार-केंद्रित मानसिकता से जुड़ाव-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बढ़ने, सहयोग, सहानुभूति एवं हितधारक सहभागिता को प्रभावी लोक प्रशासन की प्रमुख विशेषताएं बनाने पर जोर दिया।

पूर्व संयुक्त सचिव (वित्त), ICAR, श्री जी. पी. शर्मा ने सत्यनिष्ठा, वित्तीय अनुशासन एवं सरकारी नियमों के गहन ज्ञान को कुशल लोक प्रशासन की आधारशिला बताया। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में कार्यालय प्रक्रिया, स्थापना संबंधी मामले, वित्तीय प्रबंधन, General Financial Rules (GFR), खरीद प्रक्रिया, सेवा नियम, सतर्कता एवं e-Office सहित प्रशासन के महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया।

यह कार्यक्रम ICAR में मानव संसाधन विकास एवं संस्थागत क्षमता निर्माण पर निरंतर ध्यान केंद्रित करने की पहल को दर्शाता है तथा नव नियुक्त सहायकों को कुशल, पारदर्शी एवं नागरिक-केंद्रित प्रशासनिक सेवाएं प्रदान करने के लिए तैयार करने में सहायक होगा।

डॉ. एम. एल. जाट ने ICAR-CIFRI की 'Waste to Wealth' तकनीक का विमोचन किया: कृषि-औद्योगिक अपशिष्ट से सतत मत्स्य आहार की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

सतत जलीय कृषि को बढ़ावा देने और भारत की चक्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए भा.कृ.अनु.प.-कें.अं.मा.अ.सं., बैरकपुर ने "Waste to Wealth: Converting Agro-Industrial Waste into Cost -Effective, Sustainable Fish Feed—A Circular Economy for Aquaculture" नामक प्रमुख प्रकाशन का विमोचन किया। इसका विमोचन कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) के सचिव एवं ICAR के महानिदेशक डॉ. एम. एल. जाट ने किया। इस अवसर पर ICAR के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. डी. के. यादव तथा भा.कृ.अनु.प.-कें.अं.मा.अ.सं. के निदेशक डॉ. प्रदीप डे उपस्थित थे।

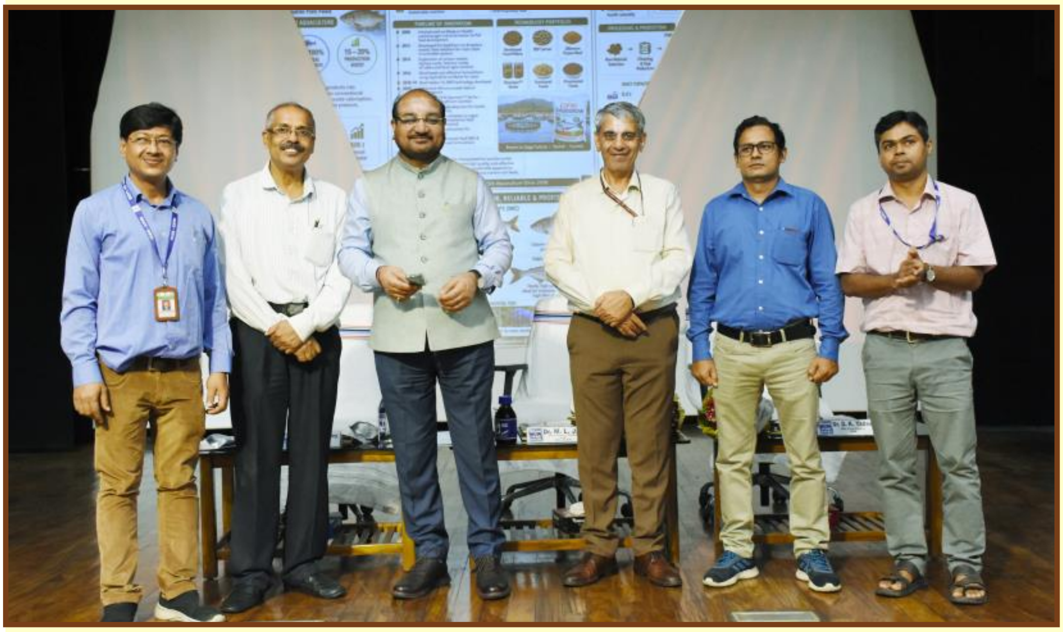

डॉ. जाट ने कृषि अपशिष्ट को मूल्यवर्धित जलीय कृषि इनपुट में बदलने को संसाधन दक्षता बढ़ाने, किसानों की आय में वृद्धि करने तथा मात्स्यिकी क्षेत्र के सतत विकास को मजबूत करने वाला परिवर्तनकारी दृष्टिकोण बताया। उन्होंने "कचरे से कंचन" पहल को विज्ञान-आधारित नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण बताया, जो चक्रीय अर्थव्यवस्था, जलवायु-अनुकूल कृषि एवं ब्लू इकोनॉमी की राष्ट्रीय दृष्टि के अनुरूप है।

डॉ. डी. के. यादव ने कृषि-औद्योगिक उप-उत्पादों को वैकल्पिक आहार संसाधन के रूप में उपयोग करने की दिशा में Waste to Wealth पहल को महत्वपूर्ण प्रगति बताया। डॉ. धर्मेंद्र कुमार मीणा के नेतृत्व में विकसित इस तकनीक के अंतर्गत 15 वर्षों से अधिक समय से कृषि-औद्योगिक उप-उत्पादों को पोषण-संतुलित, किफायती एवं पर्यावरण-अनुकूल मत्स्य आहार में बदलने पर अनुसंधान किया जा रहा है।

इस तकनीक में राइस ब्रान, टैपिओका अपशिष्ट, ऑयल केक, ब्रुअर्स स्पेंट ग्रेन, Black Soldier Fly (BSF) लार्वा तथा रेशमकीट प्यूपा मील जैसे विभिन्न कृषि-औद्योगिक अपशिष्टों का उपयोग किया गया है। क्षेत्रीय प्रदर्शन में मत्स्य आहार लागत में 20–30 प्रतिशत कमी, मछली आहार में फिश मील के 75–100 प्रतिशत तक प्रतिस्थापन तथा मत्स्य उत्पादन में 15–20 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। इस पहल के अंतर्गत CIFRI CAGEGROW floating feed, Reshmeen™ feed series, Black Soldier Fly larvae-based feed, silkworm pupae meal formulations, functional fish feeds तथा विशेष सजावटी मछली आहार जैसे विभिन्न उत्पाद विकसित किए गए हैं। इन तकनीकों का परीक्षण भारतीय प्रमुख कार्प—कतला, रोहू एवं मृगल—के साथ-साथ तिलापिया, पंगासियस एवं सजावटी मछलियों के लिए भी किया गया है।

तकनीक को व्यापक स्तर पर अपनाने के लिए इसे छोटे उद्यमियों के लिए 0.5 टन प्रतिदिन से लेकर वाणिज्यिक स्तर पर 50,000 टन वार्षिक उत्पादन तक बढ़ाया जा सकता है। मानकीकृत प्रसंस्करण प्रोटोकॉल गुणवत्ता, सुरक्षा, पोषक तत्वों की एकरूपता एवं विश्वसनीय प्रदर्शन सुनिश्चित करते हैं।

डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि "कचरे से कंचन" पहल विज्ञान-आधारित ऐसे नवाचारों का उदाहरण है जो जलीय कृषि को अधिक लाभकारी, संसाधन-कुशल एवं पर्यावरणीय रूप से सतत बनाने में मदद करते हैं। कृषि-औद्योगिक अपशिष्ट को मूल्यवान मत्स्य आहार में बदलने से उत्पादन लागत कम होने के साथ ग्रामीण आजीविका के अवसर भी सृजित होते हैं तथा भारत की ब्लू इकोनॉमी को मजबूती मिलती है।

सिफरी, IWMI एवं LRRM ने सतत SIS–कार्प पॉलीकल्चर के माध्यम से सुंदरबन के मत्स्यजीवी समुदायों को सशक्तीकरण

जलवायु-अनुकूल जलीय कृषि को बढ़ावा देने एवं कमजोर मत्स्यजीवी समुदायों की आजीविका सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भा.कृ.अनु.परि.-कें.अं.मा.अ.सं., बैरकपुर ने International Water Management Institute (IWMI) एवं Lokmata Rani Rashmoni Mission (LRRM) के सहयोग से भारतीय सुंदरबन के तीन स्थानों पर “Sustainable Small Indigenous Species (SIS)–Carp Polyculture in Homestead Ponds” विषय पर तीन एक-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

इस पहल के अंतर्गत 113 पुरुष एवं 21 महिलाओं सहित 134 छोटे पैमाने के मत्स्यजीवियों को वैज्ञानिक ज्ञान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसका उद्देश्य घरेलू तालाबों में सतत मत्स्य पालन अपनाकर परिवार की आय, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा तथा जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन क्षमता बढ़ाना था।

प्रशिक्षण में वैज्ञानिक तालाब तैयारी, स्टॉकिंग घनत्व, जल गुणवत्ता प्रबंधन, आहार प्रबंधन, रोग रोकथाम तथा SIS–कार्प पॉलीकल्चर की सर्वोत्तम प्रबंधन पद्धतियों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। छोटी देशी मछली प्रजातियों के पोषण महत्व पर विशेष जोर दिया गया। ये प्रजातियां उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन, विटामिन एवं आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों से समृद्ध होती हैं और कुपोषण से निपटने तथा पारिवारिक पोषण सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि सतत SIS–कार्प पॉलीकल्चर सुंदरबन जैसे पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में पोषण सुरक्षा, जलवायु अनुकूलन क्षमता एवं सतत ब्लू ग्रोथ प्राप्त करने का परिवर्तनकारी मार्ग है। विज्ञान-आधारित नवाचारों, संस्थागत साझेदारी एवं सामुदायिक सहभागिता के समन्वय से भा.कृ.अनु.प.-कें.अं.मा.अ.सं. उत्पादन प्रणालियों को मजबूत करने, जलीय जैव-विविधता के संरक्षण तथा ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है।

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों ने प्रदर्शित तकनीकों को अपनाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। यह पहल सुंदरबन के मत्स्यजीवी समुदायों में सतत जलीय कृषि नवाचारों को बढ़ावा देने, आजीविका के अवसरों को मजबूत करने, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा बढ़ाने तथा दीर्घकालिक जलवायु अनुकूलन क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

पुलिकट झील में देशी मत्स्य जैव-विविधता के संरक्षण के लिए मत्स्यजीवी समुदायों को संगठित किया

भारत की समृद्ध जलीय जैव-विविधता के संरक्षण एवं जलवायु-अनुकूल मात्स्यिकी को बढ़ावा देने की दिशा में सिफरी, बैरकपुर ने 23 से 27 जुलाई 2026 तक पुलिकट झील में देशी मछली प्रजातियों के संरक्षण पर पांच फील्ड डे-सह-सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की। यह पहल संस्थान की अनुसंधान परियोजना "Assessing Shifts in Fish Diversity, Environment, and Fish Stocks in Relation to Climate Change in Pulicat Lake" के अंतर्गत आयोजित की गई।

पुलिकट झील भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की लैगूनों में से एक है। यह विभिन्न देशी मछली प्रजातियों को आश्रय प्रदान करने के साथ हजारों पारंपरिक मछुआरा परिवारों की आजीविका का आधार है। जलवायु परिवर्तन, आवास क्षरण तथा असतत मत्स्यन पद्धतियों से बढ़ती चिंताओं के बीच इस कार्यक्रम का उद्देश्य समुदाय-आधारित संरक्षण प्रयासों को मजबूत करना तथा सतत मात्स्यिकी प्रबंधन को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम का आयोजन सिफरी के निदेशक डॉ. प्रदीप डे के समग्र मार्गदर्शन तथा नदीय पारिस्थितिकी एवं मात्स्यिकी प्रभाग के प्रमुख डॉ. एस. के. मन्ना के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में किया गया। पुलिकट झील के आसपास के मछुआरा गांवों में क्षेत्रीय क्रियान्वयन एवं सामुदायिक संपर्क का नेतृत्व डॉ. दिबाकर भक्त और डॉ. संथाना कुमार वी., श्री हंसराज कुमार एवं श्री निदिश कुमार ने किया।

जागरूकता सत्रों में देशी मछली प्रजातियों के पारिस्थितिक महत्व, सतत मत्स्यन पद्धतियों, जैव-विविधता संरक्षण तथा पुलिकट झील के पारिस्थितिक तंत्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर संवादात्मक चर्चा, क्षेत्रीय प्रदर्शन एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन दिया गया। प्रतिभागियों को मछली विविधता एवं झील पर निर्भर आजीविकाओं की रक्षा के लिए सामुदायिक संरक्षण उपाय अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

डॉ. डे ने देशी मत्स्य जैव-विविधता के संरक्षण को जलीय पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य, जलवायु अनुकूलन क्षमता एवं सतत मात्स्यिकी-आधारित आजीविका के लिए रणनीतिक आवश्यकता बताया। उन्होंने वैज्ञानिक संस्थानों, सरकारी एजेंसियों एवं स्थानीय मत्स्यजीवी समुदायों के बीच समन्वय, सहभागी शासन एवं पारिस्थितिकी-आधारित संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता पर जोर दिया।

अभियान में संस्थान के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मचारियों, मत्स्य विभाग के अधिकारियों, मछुआरा सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों, सामुदायिक नेताओं तथा स्थानीय मछुआरों सहित 115 से अधिक हितधारकों ने सक्रिय भागीदारी की।

इस पहल ने विज्ञान-आधारित मात्स्यिकी प्रबंधन, देशी जलीय जैव-विविधता संरक्षण तथा स्थानीय समुदायों को महत्वपूर्ण अन्तर्स्थलीय एवं मुहाना पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण में प्रमुख भागीदार बनाने के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को पुनः पुष्ट किया।

बंगाल के प्रमुख मत्स्य क्षेत्र मोयना में 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत सतत कृषि को बढ़ावा दिया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की भविष्य के लिए तैयार, कुशल एवं जवाबदेह प्रशासनिक कार्यबल विकसित करने की प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए सिफरी, बैरकपुर ने नव नियुक्त सहायकों (Reserve Panel) के लिए चरण-II प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया। संस्थान इस कार्यक्रम के लिए नामित नोडल केंद्र था। इसका उद्देश्य प्रशासनिक उत्कृष्टता को मजबूत करना, संस्थागत शासन को बेहतर बनाना तथा ऐसे नए पेशेवर तैयार करना था जो भारत के कृषि अनुसंधान एवं नवाचार तंत्र को प्रभावी सहयोग प्रदान कर सकें।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रदीप डे, कार्यक्रम निदेशक के समग्र मार्गदर्शन में किया गया। श्री निर्मल सरकार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.परि.-कें.अं.मा.अ.सं. तथा श्री रवि मिश्रा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, ICAR-NINFET, कोलकाता ने प्रशिक्षण का समन्वय किया। विभिन्न ICAR संस्थानों से नव नियुक्त सहायकों ने इसमें भाग लिया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. डे ने कहा कि कुशल प्रशासनिक व्यवस्था प्रत्येक सफल अनुसंधान संस्थान की आधारशिला है। जहां वैज्ञानिक नवाचार कृषि प्रगति को गति देते हैं, वहीं मजबूत प्रशासनिक सहयोग पारदर्शिता, जवाबदेही, समयबद्ध निर्णय लेने एवं संस्थागत कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करता है।

उन्होंने कहा कि आज प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अधिकारी भविष्य में ऐसे प्रशासनिक नेतृत्व का हिस्सा होंगे जो Viksit Bharat @2047 के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाएगा।

गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम में सरकारी प्रशासन, वित्तीय प्रबंधन एवं संस्थागत शासन के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया। प्रतिभागियों को Manual of Office Procedure, official noting and drafting, Cabinet Notes, सेवा संबंधी मामले, Technical Service Rules (TSR), Assessment Promotion, Career Advancement Scheme (CAS), Agricultural Research Service (ARS), study leave, deputation, foreign service, CCS Leave Rules, LTC, TA Rules, disciplinary proceedings, CCS (CCA) Rules, CCS (Conduct) Rules, RTI, न्यायालयीन मामलों, GFR, Delegation of Financial Powers in ICAR, CGHS एवं CS(MA) Rules, pension, GPF, NPS, pay and allowances, PFMS, budgeting, annual accounts, pay fixation, taxation, audit procedures, GeM तथा e-Office, SPARROW एवं eHRMS सहित विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञ मार्गदर्शन दिया गया।

कक्षा-कक्ष प्रशिक्षण के अलावा कार्यक्रम में संवादात्मक चर्चाओं, व्यावहारिक प्रदर्शनों, केस-आधारित विचार-विमर्श एवं अनुभव साझा करने के माध्यम से सहयोगात्मक अधिगम का वातावरण विकसित किया गया। प्रतिभागियों ने प्रशासनिक प्रक्रियाओं की व्यावहारिक समझ प्राप्त करने के साथ ICAR प्रणाली के विभिन्न संस्थानों के बीच समन्वय एवं पेशेवर नेटवर्क को मजबूत किया।

कार्यक्रम के सफल समापन ने संस्थागत क्षमता एवं प्रशासनिक उत्कृष्टता विकसित करने के लिए ICAR के निरंतर प्रयासों में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की।

उमियम जलाशय में सतत मात्स्यिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से जनजातीय महिलाओं के नेतृत्व वाली ब्लू इकोनॉमी का सशक्तीकरण

महिला-नेतृत्व वाली मात्स्यिकी एवं सतत आजीविका विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मेघालय के Umiam Reservoir में उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र (NEH) एवं Tribal Sub-Plan (TSP) कार्यक्रम के अंतर्गत 25 जनजातीय महिला मत्स्यजीवी परिवारों को केज नेट एवं कोरैकल वितरित किए। उमियम जलाशय उत्तर-पूर्व भारत के महत्वपूर्ण अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी संसाधनों में से एक है और अनेक जनजातीय मत्स्यजीवी समुदायों की आजीविका का आधार है।

सिफरी. द्वारा केज जलीय कृषि, पालन-आधारित मात्स्यिकी, मत्स्य स्टॉक संवर्धन, क्षमता निर्माण एवं वैज्ञानिक संसाधन प्रबंधन जैसी विज्ञान-आधारित पहलों के माध्यम से जलाशय की मात्स्यिकी को विकसित किया जा रहा है। इन प्रयासों से मत्स्य उत्पादन, आजीविका सुरक्षा एवं मात्स्यिकी उद्यमों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने में सहायता मिली है।

28 एवं 31 जुलाई 2026 को आयोजित वितरण कार्यक्रम सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने Ri-Bhoi Farmers' Union (RFU), Meghalaya तथा मेघालय सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से आयोजित किया। केज जलीय कृषि के लिए वैज्ञानिक रूप से डिजाइन किए गए छह केज नेट प्रदान किए गए। इसके अलावा कोरैकल वितरित किए गए, जिससे पिंजरे में मछली पालन एवं जलाशय मत्स्यन में लगी महिलाओं की गतिशीलता, कार्यकुशलता एवं सुरक्षा बेहतर हो सके।

पहल का संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे के मार्गदर्शन में किया गया। मेघालय सरकार के मत्स्य निदेशक तथा सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. एस. के. माझी ने समन्वय किया। कार्यक्रम का समन्वय वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. प्रणब दास एवं डॉ. एस. सी. एस. दास ने किया तथा तकनीकी सहयोग श्री ए. काकती, तकनीकी अधिकारी ने प्रदान किया।

डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि विज्ञान-आधारित मात्स्यिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से जनजातीय एवं नदी-तटीय समुदायों को सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि केज नेट एवं कोरैकल जैसी पहलों से महिला-नेतृत्व वाली मात्स्यिकी को मजबूत करने, सतत आजीविका को बढ़ावा देने तथा उत्तर-पूर्व क्षेत्र में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की अनुकूलन क्षमता बढ़ाने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि आधुनिक मात्स्यिकी तकनीकों को सामुदायिक सहभागिता के साथ जोड़ने से महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों के लिए मजबूत आधार तैयार हो रहा है और अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी मूल्य श्रृंखलाएं मजबूत हो रही हैं। संस्थान के हस्तक्षेप केवल मत्स्य उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनका उद्देश्य सुदृढ़ मात्स्यिकी संस्थानों का निर्माण करना है, जो रोजगार सृजित करें, संसाधन संरक्षण को बढ़ावा दें तथा उत्तर-पूर्व भारत में समावेशी आर्थिक विकास को गति दें और Viksit Bharat 2047 के राष्ट्रीय लक्ष्य में योगदान करें।

Ri-Bhoi Farmers' Union के अध्यक्ष श्री डी. माजॉ ने सिफरी एवं यूनियन के बीच लंबे समय से चले आ रहे सहयोग की सराहना की।

डॉ. प्रणब दास ने बताया कि सिफरी ने विशेष रूप से उत्तर-पूर्व भारत के मध्य-ऊंचाई वाले जलाशयों के लिए उपयुक्त केज कल्चर तकनीक विकसित की है। सहभागी दृष्टिकोण के माध्यम से संस्थान केज जलीय कृषि, संस्कृति-आधारित मात्स्यिकी, जैव-विविधता संरक्षण एवं एक्वा-टूरिज्म को बढ़ावा दे रहा है, जिसमें जनजातीय महिलाओं को मात्स्यिकी-आधारित उद्यमों के माध्यम से सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

कार्यक्रम के दौरान श्री ए. काकती ने वैज्ञानिक केज संस्कृति की मानक संचालन प्रक्रियाओं तथा कोरैकल के सुरक्षित संचालन का प्रदर्शन किया। उन्होंने जलाशय में मत्स्यन गतिविधियों के दौरान सर्वोत्तम प्रबंधन पद्धतियों एवं सुरक्षा उपायों पर जोर दिया। लाभार्थियों की ओर से सुश्री बनरी एल. नोंगब्री ने सिफरी को निरंतर तकनीकी मार्गदर्शन एवं इनपुट सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि इस सहायता से जनजातीय महिला मत्स्यजीवियों की आजीविका को मजबूत करने तथा मात्स्यिकी-आधारित उद्यमों में महिलाओं की अधिक भागीदारी को प्रोत्साहन मिलेगा।

केज नेट एवं कोरैकल का संयुक्त वितरण सिफरीकी सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी को बढ़ावा देने, महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों को मजबूत करने, मत्स्य उत्पादन बढ़ाने तथा विज्ञान-आधारित एवं समुदाय-केंद्रित हस्तक्षेपों के माध्यम से उत्तर-पूर्व भारत के जनजातीय समुदायों के सामाजिक-आर्थिक कल्याण में सुधार के मिशन की दिशा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

भा.कृ.अनु.प.-कें.अं.मा.अ.सं. ने गुवाहाटी कार्यशाला में स्मार्ट मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान एवं प्रबंधन में उभरती प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करने की अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने Drones Tech Lab, Guwahati के सहयोग से 30 जुलाई 2026 को "Application of Drones in Fishery Resources Management" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की।

कार्यशाला में वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों, मात्स्यिकी विशेषज्ञों तथा College of Fisheries, Assam Agricultural University, Raha, Nagaon के विद्यार्थियों सहित 34 प्रतिभागियों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा कि अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन का भविष्य उन्नत प्रौद्योगिकियों एवं वैज्ञानिक ज्ञान के बुद्धिमत्तापूर्ण एकीकरण में निहित है।

उन्होंने कहा कि ड्रोन-आधारित निगरानी को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), IoT एवं भू-स्थानिक तकनीकों के साथ जोड़कर जलीय पारिस्थितिक तंत्रों के वास्तविक समय आकलन, सटीक संसाधन प्रबंधन एवं साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने की व्यापक संभावनाएं हैं।

कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. पी. एल. एन. राजू, निदेशक, Assam State Space Application Centre (ASSAC), गुवाहाटी ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। डॉ. सुल्लिप कुमार माझी ने मात्स्यिकी अनुसंधान में ड्रोन तकनीक के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, सिफरी ने ड्रोन, AI एवं Internet of Things (IoT) जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाकर स्मार्ट एवं डेटा-आधारित मात्स्यिकी प्रबंधन प्रणालियां विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

डॉ. राजू ने ड्रोन, Geographic Information Systems (GIS) एवं उपग्रह-आधारित रिमोट सेंसिंग की पूरक भूमिकाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने पर्यावरणीय निगरानी में इनके उपयोग तथा Skyroute Aerospace की पहलों की जानकारी दी। उन्होंने असम सरकार द्वारा भू-स्थानिक क्षमताओं को मजबूत करने के लिए राज्य उपग्रह प्रक्षेपित करने के प्रस्ताव की भी जानकारी दी।

तकनीकी सत्र में डॉ. ए. के. यादव ने उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र के अंतर्स्थलीय खुले जल संसाधनों की विविधता, वर्तमान स्थिति एवं प्रबंधन चुनौतियों पर प्रस्तुति दी। डॉ. दास ने भारत के अंतर्स्थलीय खुले जल क्षेत्रों में मत्स्य उत्पादन बढ़ाने की वैज्ञानिक रणनीतियों पर चर्चा की तथा जल गुणवत्ता निगरानी, जलीय आवास आकलन, मत्स्य स्टॉक निगरानी एवं सटीक मात्स्यिकी प्रबंधन में सिफरी द्वारा विकसित एवं उपयोग की जा रही ड्रोन एवं IoT-आधारित तकनीकों का प्रदर्शन किया।

Drones Tech Lab के श्री सौविक भूनिया ने ड्रोन प्लेटफॉर्म तथा हवाई मानचित्रण, GIS एकीकरण, जलीय आवास आकलन, जल गुणवत्ता निगरानी एवं मात्स्यिकी संसाधन निगरानी में इनके अनुप्रयोगों का व्यावहारिक प्रदर्शन किया।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: प्रदीप डे, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,

(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.org.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: प्रकाशितनहीं की जा सकती है